PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-28 VOLUME-1 IMPACT FACTOR-SJIF-6.586, IIFS-4.125

ISSN-2454-6283 अप्रैल–जून, 2022

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

IMPACT FACTOR- IIJIF-7.312 NEW

शोध-ऋतु

सम्पादक
डॉ. सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव

पत्राचार हेतु कार्यालयीन पता -
डॉ.सुनील जाधव,
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,
हनुमान गढ़ कमान के सामने,
नांदेड-४३१६०५, महाराष्ट्र

1

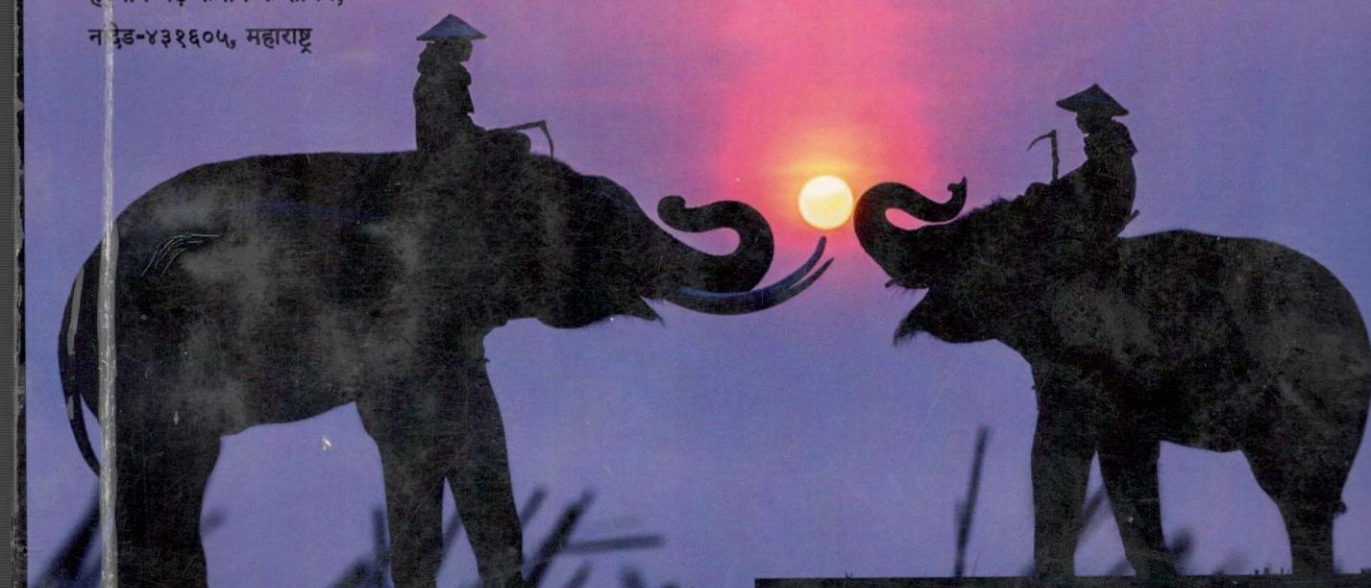

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

शोध ऋतु

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-28 **VOLUME-1** ISSN-2454-6283 **April-Jun**–2022

IMPACT FACTOR - **(IIJIF-7.312)** **SJIF-6.586,** IIFS-4.125,

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

9405384672

तकनीकी सम्पादक

अनिल जाधव, मुंबई

पत्राचार हेतु पता–

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड–431605

अनुक्रमणिका

1.आयकर अधिनियम की धारा 80 सी का विश्लेषणात्मक अध्ययन 6
–डा.नवीन अग्रवाल, ... 6
2.अदम गोंडवी : संघर्ष और सृजन 8
–डॉ0 सुभाषचन्द्र गुप्त 8
3.Uniform Civil Code : A Microscopic Analysis 15
-[1]prof. Ashok Kumar Rai, [2]bipendra Kumar Pandey 15
4.रिश्तो का खंडहर 'अंतिम साक्ष्य' उपन्यास 18
–शुभा रानी के 18
5.प्रतिभा राय के उपन्यासों में मिथक संदर्भ 21
–पी. अंजली 21
6.वेणीसंहार में आचार और व्यवहार 23
–संजय कुमार मिश्र 23
7.डॉ0 हरिवंश राय बच्चन की डायरी साहित्य का समसामयिक मूल्यांकन 26
– डॉ0राधा देवी 26
8.हरिवंश राय बच्चन की साहित्यिक समीक्षा 28
–वरुण कुमार 28
9.नए मोड की गजले : साये में धूप 29
–प्रा.डॉ.मीना भाऊराव घुमे 29
10.भास्कराचार्यस्य वैशिष्ट्यम् 33
– [1]गिरीशभट्टः बि, [2]दिनेश मोहन जोशी 33
11.मंदिर में कच्छप प्रतिमा की स्थापना : अध्ययन एवं विवेचन 37
–नेहा प्रधान 37
12.आधुनिक हिंदी उपन्यासों में नारी विमर्शःसंदर्भ–चयनित उपन्यास 39
–डॉ.रत्नमाला धारबा धुळे 39
13.अरुणाचल का 'जंगली फूल' 42
-[1]डॉ.किंगसन सिंह पटेल [2] ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह. 42
14.बदलता भारतीय परिदृश्य : साहित्य, संस्कृति, संचार एवं मनोविज्ञान के विशेष संदर्भ में 45
–डॉ.सीमा माहेश्वरी 45
15.सूर्यबाला के उपन्यासों में व्याप्त शिक्षा एवम् बेरोजगारी की समस्या 48
–सालवे आशा गोविन्दराव 48
16.घरेलू हिंसा के लिए उत्तरदायी कारकों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन 50
–[1]डॉ.जयश्री राठौर सहआचार्य, [2]गीतांजलि शर्मा 50
17.नागपुरी साहित्य में झारखण्ड की संस्कृति 54

सामाजिक चित्रण–बच्चन जी सामाजिक चेतना के कवि थे उनके साहित्य में समाज की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है। इन्होंने अपने साहित्य में समाज यह वह यथार्थ हो उठता है। इनककी अपने व्यक्तित्व में भी सामाजिक भावना का चित्रण मिलता है।

मानवता वाद–मानवता वाद एक ऐसी विराट भावना है जिसमें सम्पूर्ण जगत के प्राणियों का हित चिंतन किया जाता है। बच्चन जी ने अपने प्रेम व मस्ती में डूबे कवि नहीं थे बल्कि उनके साहित्य में मानवता की ऐसी विराट भावना के भी दर्शन होते हैं। उनके साहित्य में मानव के प्रति प्रेम भावना अभिव्यक्त हुई है। उन्होंने स्वार्थी मनुष्यों पर कटु व्यंग्य किये हैं।

भाषा शैली–श्री हरिवंश राय बच्चन प्रखर बुद्धि के साहित्य कार इनकी भाषा शुद्ध साहित्यक रवड़ी बोली थी। इन्होंने संस्कृत की तत्सम् शब्दावली का अधिकता से प्रयोग किया हुआ है। इसके साथ ही साथ तद्भव शब्दावली, उर्दू, फारसी, अंग्रजी आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है। इसी वजह से इनका साहित्य सबसे अधिक लोक प्रिय हुआ था। इन्होंने अपेन साहित्य में रीति शैली का भी प्रयोग किया है।

अलंकार–श्री हरिवंश राय बच्चन जी के साहित्य में प्रेम सौन्दर्य और मस्ती का अद्भुत संगम है। इन्होंने अपने काव्य में शब्दालंकार तथा अर्थालंकार दोनों का सफल प्रयोग किया है। अलंकारों के प्रयोग से इनके साहित्य में और ज्यादा निखार और सौन्दर्य उत्पन्न हो गया है। इनके साहित्य में अनुप्रास, यमक, श्लेष, पदमैगी, स्वरमैगी, पुनरुक्ति, प्रकाश, उपमा, रुपक, मानवीकरण आदि अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया हुआ है–जैसे–हो जाए न पथ में रात कहीं, मंजिल भी तो है दूर नहीं, यह सोच थका दिन का पंक्षी भी धीरे–धीरे चलता है। दिन जल्दी–जल्दी ढलता है।

बिम्ब योजना – बच्चन जी की विम्ब योजना अत्यन्त सुन्दर है। इन्होंने भाव अनुरुप विम्ब योजना की है। इंद्रिय बोधक विम्बों के साथ–साथ सामाजिक, राजनीतिक आदि विम्बों का सफल प्रयोग हुआ है।

रस–बच्चन जी प्रेम और सौन्दर्य के कवि है। अतः उनके साहित्य में श्रंगार रस के दर्शन होते हैं। श्रंगार रस के संयोग पक्ष की अपेक्षा उनका मन वियोग पक्ष में अधिक रमा है। उन्होंने वियोग श्रंगार का सुन्दर चित्रण किया है। इसके साथ ही साथ रचनात्मकता को प्रकट करने लिए शान्त रस की भी अभिव्यंजना की है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1.बच्चन रचनावली भाग 1 से 12 तक **2.**मधुशाला–डॉ0 हरिवंश राय बच्चन **3.**क्या भूलूँ क्या याद करुँ–डॉ0हरिवंश राय बच्चन **4.**प्रवास की डायरी–डॉ0हरिवंश राय बच्चन

9.नए मोड की गजले : साये में धूप

–प्रा.डॉ.मीना भाऊराव घुमे
हिंदी विभाग, दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

दुष्यंत कुमार की गजले हिंदी साहित्य की मौलिक धरोहर है। उन्होंने हिंदी गजलों को परंपरागत रुप से बाहर निकाला और जीवनसंदर्भों से जोडा। उनकी गजलों में व्यक्त पीडा सामाजिक विषमताओं की देन है। परंपरागत रुप में दिल को बहलाने के लिए गजलों के माध्यम से अभिव्यक्ति होती रही ऐसी गजलें दुष्यंत जी ने नहीं लिखी। सामान्य जन तक अपनी पीडा को पहुँचाया जो व्यष्टी से समष्टी तक का सफर करती है। नयी कविता के यह कवि गजल विधा की ओर झुके क्योंकि उनकी अंतरात्मा ने वह चुना था। वे स्वयं इस बारे में लिखते है "मैं महसूस करता हूँ कि किसी भी कवि के लिए कविता में एक शैली से दूसरी शैली की ओर जाना कोई अनहोनी बात नहीं बल्कि एक सहज और स्वाभाविक प्रक्रिया है। किंतु मेरे लिए बात सिर्फ इतनी नहीं है। सिर्फ पोशाक या शैली बदलने के लिए मैंने गजले नहीं कहीं। उसके कई कारण है जिनमें सबसे मुख्य है कि मैंने अपनी तकलीफ को ..... इस शदीद तकलीफ को, जिससे सीना फटने लगता है, ज्यादा से ज्यादा सचाई और समग्रता के साथ ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाने के लिए गजलें कही हैं।"[1]

दुष्यंत कुमार की गजले 'साये में धूप' नाम से सन 1975 में पुस्तक रुप में प्रकाशित हुई जो पहले धर्मयुग, साप्ताहिक हिंदुस्तान, सारिका, प्रतिक, कल्पना आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। जीवन के विविध क्षेत्रों में व्यक्ति की स्वतंत्रता को जब–जब दबाया गया तो उद्दाम वेग के साथ विद्रोह के स्त्रोत फूट पडते हैं और व्यक्ति अपनी स्वतंत्र सत्ता प्राप्त करता ही है। आधुनिक युगबोध के कवि दुष्यंत की गजलों में यही व्यक्तिस्वातंत्र्य एक नई दिशा नये तेवर में व्यक्त हुआ है। वे व्यक्ति की स्वतंत्रता को जनतांत्रिक और मानवतावादी बुनियाद पर प्रतिष्ठित करते है। जीवन में केवल सफलता ही प्राप्त हो ऐसा दुष्यंत जी का मानना नहीं है, और न ही असफलता में निराश होना उचित है वे तो आस्था के बूते पर जीवन को जीने का सबक देते हैं। "दुख नहीं है अब उपलब्धियों के नाम पर और, कुछ हो या न हो, आकाशसी छाती तो है।"[2] दुष्यंत कुमार आस्था के पक्षधर है, उन्हें पराजित होना स्वीकार नहीं, "वह उबलते असन्तोष को लेकर ताकत आजमाने के हिमायती है क्यों कि उसमें नई राह गढने की कामना है।"[3] उनकी मान्यता है कि संभव भी असंभव हो सकता है उसके लिए केवल निश्चय और लगन की आवश्यकता है–"कैसे आकाश में सूराक नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।"[4] वे अनास्था एवं निराशा के नहीं अपितु आस्था एवं आशावाद के कवि होने के कारण उनकी गजलों में दुखद एवं त्रासद स्थितियों को बदलने की पुकार है। नियति को न कोसते हुए वे जूझारु रुप से अपनी बात रखते हैं। दुष्यंत कुमार

अपनी आनेवाली पीढी को उत्तराधिकार में कुछ नहीं दे सकता अपने जीवन में पूर्णता से जी नहीं सका वह तो घिसटता हुआ आगे बढता रहा है वह किसी के लिए क्या अच्छा छोड सकेगा, "आगे निकल गए हैं घिसटते हुए कदम, राहों में रह गए है निशां और भी खराब।"[28] समाज विवश हो चुका है क्योंकि वह स्वयं पर कम और बाह्याडंबर तथा अंधविश्वास पर अधिक निर्भर है और इसी से दुष्यंत उन्हें बाहर लाना चाहते है। दुष्यंत कुमार मानते हैं कि अंधविश्वास व्यक्ति को दुर्बल बनाता है और भाग्यवादी बनाकर छोडता है इस संदर्भ में कमलेश्वर लिखते हैं, "ईश्वर पर उसे विश्वास नहीं था, भाग्य को वह मानता नहीं था और सिर्फ अपने पर भरोसा करना था।"[29] "हमने तमाम उम्र अकेले सफर किया, हम पर किसी खुदा की इनायत नहीं रही।"[30] दुष्यंत कुमार व्यक्ति को बुजदिल बनने से रोकना चाहते हैं। परिस्थितियाँ कैसी थी हो हमें मैदान छोडना नहीं चाहिए। वे ऐसे लोगों में परिवर्तन की चाह जगाने में विश्वास रखते हैं। उनंकी मान्यता है कि संघर्ष के बिना परिवर्तन नहीं होता इसके लिए क्रांति की चिंगारी भडकनी जरुरी है। वे विधायक तरिके से अपने मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते है। समाज की बिगडी हुई दशा को सुधारना चाहते है। "पक गई हैं आदते, बातों से सर होगी नहीं, कोई हंगामा करो, ऐसे गुजर होगी नहीं।"[31] देश में राजनीति के कई दौर आए परंतु आपातकाल एक ऐसा दौर रहा जहाँ भ्रष्टाचार, काला–बाजारी अपनी चरम अवस्था पर थी। ऐसी परिस्थिति में सामान्य आदमी की दुर्दशा, जीवन की विडंबना में अतिशय कठीन दौर से गुजरने वाले आम आदमी के यथार्थ को चित्रित करते हैं और स्वयं दुष्यंत भी उन परिस्थितियों के भुक्तभोगी हैं ऐसी परिस्थिति में आम आदमी का जीना बडा मुश्किल था और उसके विरुद्ध कुछ बोलना तो और भी कठीन था परंतु ऐसे समय में भी दुष्यांत कह उठते है, "जब जुबाँ हमसे सी नहीं जाती , जिंदगी है कि जी नहीं जाती।"[32] दुष्यंत की गजलों में मानवतावादी स्वर भी प्रमुख रुप से उभरकर सामने आता है। वे जब भी मानवता के विरुद्ध कोई बात देखते हैं अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। वे हमेशा दूसरों के लिए जीना चाहते हैं। और मरना भी। मानव के जीवन की पीडा को उन्होंने प्रामाणिकता के साथ अभिव्यक्त किया है। इन नए विविध मोडों से गुजरते हुए दुष्यंत की गजलें अपना मूल रुप कभी नहीं भूलते वे प्रेम का निरुपन भी अपनी गजलों में करते हैं परंतु बहुत कम। प्रेम का एक उदात्त रुप हम उनकी गजल में देख सकते हैं। "तुमको निहारता हूँ, सुबह से ऋतम्बरा, अब शाम हो रही है, मगर मन नहीं भरा।"[33] प्रेम को वासना से बाहर निकालकर भावनात्मक रुप में व्यक्त करते हैं। कवि अपने प्रिया के सात्विक सौंदर्य को अपनी आँखों से ही पीना चाहते हैं। वे उसे छुकर प्राप्त करने में विश्वास नहीं करते। वे वासना की गंदी गालियों में कविता को भटकाकर भ्रष्ट नहीं करना चाहते।

दुष्यंत की गजलों में हमें देश की स्थिति से परिचय प्राप्त होता है। साथही वैयक्तिक चेतना सामाजिक तथा राजनीतिक स्थितियों के कारण बनी आम आदमी की अवस्था के साथ जीवन के विविध आयामों को छुनेवाली उनकी गजलों को उन्होंने वास्तविकता के धरातल पर उतारते हुए परंपरागत गजलों से भिन्न युगीन स्थितियों का जायजा लिया है। सामान्य जीवन के संघर्ष, घात–प्रतिघात,विवशता, अंधविश्वासों का विरोध की समर्पक अभिव्यक्ति को है। उन्होंने गजल की विषयवस्तु को बिलकुल नया मोड दिया है। इस संदर्भ में मधु खराटे लिखते है, "इसमें कोई संदेह नहीं है कि हिंदी गजल को दुष्यंत कुमार ने लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचाया। उन्होंने गजल को दरबार से बाहर निकालकर 'घरबार' से जोड दिया। जो गजल आज तक प्रेम और श्रृंगार वर्णन में ही अपनी श्रेष्ठता समझती थी, उसे आम जीवन के विभिन्न विषयों की अभिव्यक्ती करते का सशक्त माध्यम बनाने का महत्तवपूर्ण कार्य दुष्यंतकुमार ने किया।"[34] दुष्यंतकुमार ने दिलबहलाने के लिए नहीं बल्कि अपनी व्यक्तिगत एवं समष्टिगत पीडा को सर्वसामान्य तक पहुँचाने के लिए गजल लिखी। नाटक उपन्यासों के माध्यम सें सृजन करनेवाले दुष्यंत कुमार की असली पहचान एक कवि के रुप में हुई हैं। 'साये में धूप' यह उनकी अंतिम रचना है। इस संगह से ही उन्हें लोकप्रियता मिली। इसमें 52 गजले हैं। उन्होंने परंपरागत कथ्य से हटकर गजल को सामाजिकता से जोडा। पूर्वावार चली आ रही गजल परंपरा को एक नई दिशा एवं एक नई भाव–भूमि प्रदान की। मानो दुष्यंत कुमार गजल के पर्याय बन गए है। दुष्यंत कुमार की गजलों का अध्ययन करने के बाद ऐसा प्रतीत होता है कि आज का हिंदी गजलकार जनमानस से अत्यंत आत्मीयतापूर्ण रिश्ते कायम करता हुआ बोलचाल की भाषा में अपनी बात को लोगों तक पहुंचाने में समर्थ हैं। इनकी गजलों की भाषा में हिंदी और उर्दु का सुंदर समन्वय परिलक्षित होता है। भाषा की दृष्टि से अलंकार, छंद रस का यधायोग्य ध्यान रखा है, प्रतीक बिंब के कारण गजले नई बन पडी है। लय, गेयता के कारण गजलों में गुनगुनाने की खुमारी भी शुमार हैं। गजल की विकासयात्रा में अपना अनूठा योगदान देते हुए दुष्यंत कुमार ने गजलो को स्वतंत्र विधा के रुप में प्रस्थापित करने के लिए जो प्रयत्न किए वे सराहनीय है। यह साहस केवल दुष्यंत ही कर सके कि गजलों को एक नए मोड पर लाकर छोडा है ताकि भविष्य में इसे एक अच्छा कल मिलें।

संदर्भ सूची :–(1) सारिका–सं. कमलेश्वर मई 1976 पृ.36 **(2)** साये में धूप – दुष्यंत कुमार – पृ.16 **(3)** नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर–डॉ.संतोषकुमार तिवारी पृ.248 **(4)** साये में धूप–दुष्यंतकुमार –पृ.49 **(5)** वही–पृ.30 **(6)** नयी कविता : नये धरातल– डॉ. हरिचरण शर्मा पृ.238 **(7)** आवाजों के घेरे – दुष्यंतकुमार पृ.13 **(8)** साये में धूम –दुष्यंतकुमार पृ.43 **(9)** वही–पृ.64 **(10)** वही–पृ.35 **(11)** कल्पना, सं. बदरी विशाल पित्ती, पृ.33 **(12)** साये मे धूप–दुष्यंतकुमार पृ.57 **(13)** वही पृ.13 **(14)** दुष्यंतकुमार और उनका साहित्य –डॉ.हरिचरण शर्मा चिंतक पृ.98 **(15)** साये में धूप –दुष्यंतकुमार पृ.13 **(16)** वही – पृ. 30 **(17)** वही– पृ. 16 **(18)** वही– पृ. 21 **(19)** वही– पृ. 57 **(20)** वही– पृ. 15 **(21)** वही– पृ. 23 **(22)** वही– पृ. 17 **(23)** वही– पृ. 49 **(24)** वही– पृ. 21 **(25)** वही– पृ. 15 **(26)** वही– पृ. 56 **(27)** दुष्यंतकुमार : रचनाएँ और रचनाकार– गणेश अष्टेकर पृ.144 **(28)** साये में धूप : दुष्यंतकुमार पृ. 48 **(29)** सारिका – सं. कमलेश्वर मई 1976 पृ. 14 **(30)** साये में धूप– दुष्यंतकुमार पृ. 18 **(31)** वही पृ.51 **(32)** वही पृ. 45 **(33)** वही पृ.46 **(34)** हिंदी गजल के प्रमुख हस्ताक्षर प्रा. मधु खराटे 1994, पृ. 81 .

IIJIF GENERAL IMPACT FACTOR

iiJS

Scientific Journal Impact Factor

TOGETHER WE REACH THE GOAL

ISSN INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INTERNATIONAL CENTRE

Official Correspondence Address:- Dr. Sunil Jadhav, Infront of Hunaman Gad kaman,
Maharana Pratap Housing Society, Nanded - 431605, Maharashtra.
Email - shodhrityu78@yahoo.com

WhatsApp 9405384672

ISSN 2454-6283

9 772454 628000

संपादक

प्रसादराव जामि

काव्य धारा

इस साझा पुस्तक के प्रकाशन के बाद तत्संबंधित किसी भी प्रकार का विवाद या आलोचना उठती है तो उक्त काव्य के रचनाकार कानूनी कार्यवाही के लिए उत्तरदायी होंगे। पुस्तक में संकलित काव्यों के सर्वाधिकार काव्यकारों के पास सुरक्षित हैं। उनकी लिखित अनुमति के बिना किसी भी अंश की फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित, प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

प्रथम संस्करण : 2022

सामग्री कॉपीराइट : संबंधित काव्य के रचनाकार स्वयं

पुस्तक कॉपीराइट : गीता प्रकाशन

प्रकाशक : गीता प्रकाशन
4-2-771, रामकोट चौरस्ता,
हैदराबाद 500001 तेलंगाना भारत
सेल : 9849250784
geetaprakashan7@gmail.com

ISBN : 978-93-91934-06-4
Price : 129.00

Kavya Dhara

Collection of POEMS

Edited by

Prasadarao Jami

मैं निराली

मैं निराली अब निरुढ हो चुकी हूँ ।

मेरी निस्वान सांसों में
निस्तीर्णता की हवा पैदा हो चुकी है
क्योंकि तुम
निठल्ली कलात्मक निस्संगता से
निस्तब्धता की हद पार कर चुके हो ।
मैं निराली अब निरुढ हो चुकी हूँ ।
निस्वामीयकरंण से पूर्व ही
नीचट हो निस्तरण कर चुकी हूँ
क्योंकि तुम
निपतन का निदान न कर
निचाशय का सागर बन चुके हो ।
मैं निराली अब निरुढ हो चुकी हूँ ।
निमेषण भूल अब निकुंज की
निरबंसिया बन चुकी हूँ
क्योंकि तुम
निरवशेष परंतु निरर्थक
नियंता बनने की भूल कर चुके हो ।
मैं निराली अब निरुढ हो चुकी हूँ ।

डॉ. मीना घुमे

सहायक प्राध्यापक

दयानंद कला महाविद्यालय , लातूर जिला. लातूर (महाराष्ट्र)

9689190729

ISBN : 978-93-91934-06-4

129/

Available at amazon

geetaprakashan7@gmail.com

महिला आत्मकथाओं में नारी संवेदना

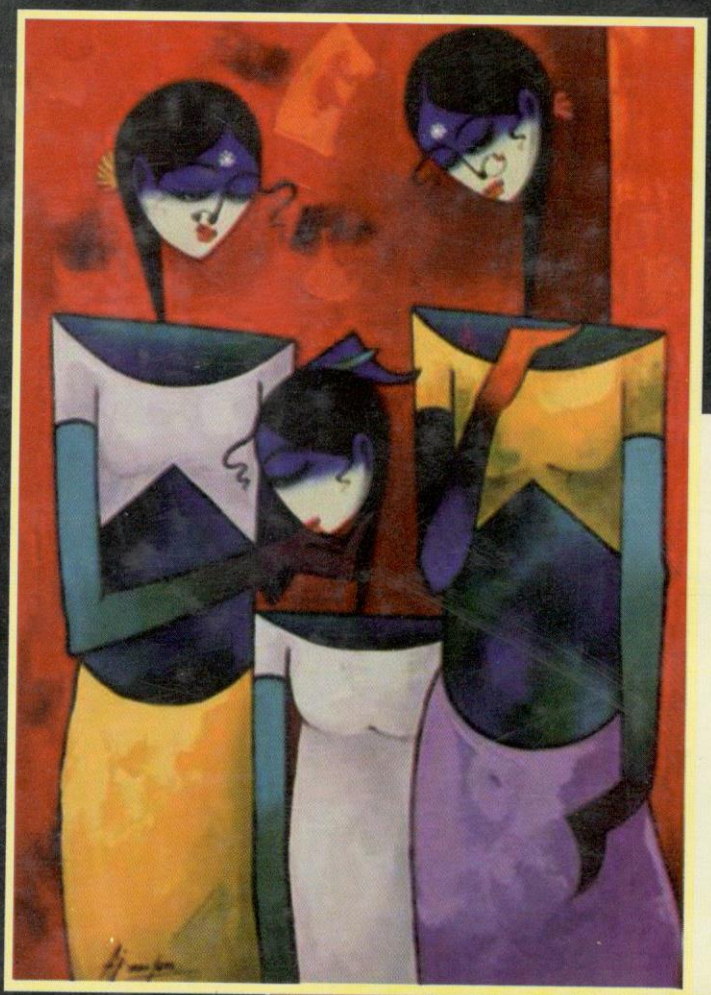

डॉ. मीना धुमे (मुंगले)

प्रकाशक
ए.बी.एस. पब्लिकेशन
आशापुर, सारनाथ
वाराणसी-221 007 (उ०प्र०)
मो० 09450540654, 08669132434
E-mail : abspublication@gmail.com

✶

ISBN : 978-93-86077-90-54

✶

© लेखकाधीन

✶

प्रथम संस्करण : 2019

✶

मूल्य : 795/-

✶

शब्द संयोजन :
रुद्र ग्राफिक्स
E-mail : rudragraphics9@gmail.com

✶

मुद्रक :
पूजा प्रिण्टर्स
बसंत विहार, नौबस्ता

Mahila Aatmkathaon Me Nari Samvedna
by : Dr. Meena Ghume (Mungre)
Price : *Seven hundred Ninty Five Only.*

अनुक्रम

१.	हिंदी आत्मकथा का स्वरुप एवं विकासक्रम	09
२.	हिन्दी महिला आत्मकथाकारों का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व	61
३.	आत्मकथाओं का स्वरुप विवेचन एवं विशेषताएँ	96
४	आत्मकथाओं में व्यक्त नारी विमर्श और नारी संवेदना	167
५.	हिन्दी महिला आत्मकथाओं में साम्य एवं वैषम्य	228
६,	आत्मकथाओं की भाषा-शैली	252
	उपसंहार	303
	संदर्भ ग्रंथ सूची	309

डॉ. मीना घुमे (मुंगरे)

जन्म : 5 सितंबर 1978, डोंगरज, जिला-लातूर (महाराष्ट्र)

शिक्षा : एम.फिल., एम.एड., पीएच.डी. स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड।

पुरस्कार : राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार परिषद द्वारा डॉ. हरिवंशराय बच्चन स्मृति पुरस्कार-2008 से सम्मानित

अध्ययन-अध्यापन एवं रुचि :

- सन् 2008 से विद्यालय तथा महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य
- इंदिरा गांधी मुक्त विद्यापीठ से स्नातकोत्तर डिप्लोमा (अध्ययनरत) महिला विषयक गतिविधियों में रुचि

उल्लेखनीय :

- विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय संगोष्ठियों में शोध आलेख प्रस्तुति तथा सहभाग।
- आकाशवाणी केंद्र नांदेड से समसामयिक विषयों पर भाषण
- 'भारतीय स्त्री शक्ति' संगठन, नांदेड शाखा के माध्यम प्रतिनिधि के रूप में कार्यरत
- प्रथम 'नारी शक्ति कुंभ' वृंदावन के अक्षयपात्र 2018 में सहभाग

संप्रति : सहायक प्राध्यापक (अंशकालीन)
नेताजी सुभाषचंद्र बोस महाविद्यालय, नांदेड

संपर्क : डॉ. मीना घुमे (मुंगरे)
137, 'हिरकणी' सदन
आशीर्वाद नगर, नांदेड महाराष्ट्र-431605
ई-मेल : meenaghume@gmail.com

ABS
ए.बी.एस. पब्लिकेशन
आशापुर, सारनाथ, वाराणसी-221 007
Ph. : (+91) 9450540654, 8669132434
E-mail : abspublication@gmail.com
/ AbsPublication

ISBN : 978-93-86077-90-5

₹795/-

RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक

अक्षर वार्ता

ISSN 2349 - 7521/ IMPACT FECTOR - 2.891

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड शोध पत्रिका

वर्ष-16 अंक - 5 , भाग-2 (मार्च - 2020)
Vol - XVI Issue No - V, Part-II (March -2020)
Monthly International Refereed Journal & Peer Reviewed

» aksahrwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +91898954742

अनुक्रम

» शिक्षा में संस्कार विहीनता : सरोकार और समाधान
अमिता शर्मा 05

» प्रवासी हिंदी कहानियों में निहित सच
डॉ. गीता पांडे 09

» गाँधी जी का मैथिलीशरण गुप्त कृत 'साकेत' पर प्रभाव
डॉ. मिथलेश कुमारी 12

» मधु कांकरिया की कहानियों में युवा पीढ़ी और सामाजिक मूल्य
श्रीनिता पी. आर 16

» हिन्दी साहित्य में अस्मिता की खोज में नारी
पूनम निर्मल 17

» महिला - समाख्या : महिला सशक्तिकरण की एक पहल
डॉ. शशि प्रभा वार्ष्णेय 19

» संस्कृत साहित्य में वर्णित प्रमुख वनस्पतियों की वैज्ञानिक अवधारणा
डॉ. शलिनी वर्मा 22

» महर्षि दयानंद सरस्वती और हिंदी भाषा
प्रा. डॉ. मीना भाऊराव घुमे 25

» मार्क्स के समाजवादी राज्य तथा महात्मा गाँधी के सर्वोदयी रामराज्य की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता
डॉ. विनोद कुमार 'पाठक' 29

» 'अमीर खुसरो : जनमानस के कवि'
डॉ. कंचन राय 34

» हाइब्रिड युद्धकला का अवधारणात्मक अध्ययन
डॉ. राहुल कुमार 39

» समकालीन हिन्दी कविता में धार्मिक साम्प्रदायिकता का विरोध
अरविन्द कुमार 42

» महाकाव्यात्मक उपन्यासों में वक्रता सौन्दर्य
डॉ. अंजू दुबे 45

» Female Predicament in Male Chauvinistic Society : A Critical Analysis of Six Characters in Search an Author
Dr. Poonam Rani Gupta
Dr. Brajesh Kumari 47

» Moral Vision in William Golding's 'Lord of the Flies' and 'The Inheritors'
Dr. Rashiqa Riaz 51

» इलेक्ट्रानिक्स पुस्तक (ई-पुस्तकें) की वर्तमान में उपयोगिता
सुजाता सेन 55

अक्षर वार्ता
ISSN 2349-7521
Vol - XVI, Issue - V, Part - II, March - 2020 "AKSHARWARTA" Monthly International Referred Journal

महर्षि दयानंद सरस्वती और हिंदी भाषा

प्रा. डॉ. मीना भाऊराव घुमे

• हिंदी विभाग, नेताजी सुभाषचंद्र बोस महाविद्यालय, नांदेड

19 वी शताब्दी में खडी बोली का साहित्यिक विकास अपनी एक विशिष्ट गति के साथ अग्रसर हो रहा था। वैसे खडी बोली का विकास 11 वी शताब्दी से ही होने लगा था। हिंदवी, हिंदुई, हिन्दुवी आदि नाम से इसके उल्लेख मिलते हैं। आधुनिक काल में इसे खडी बोली के नाम से अभिहित किया गया। 17 वी शति में उर्दु का बोलबाला बढता गया वो भी सामंती, दरबारी क्षेत्र में जिसमें अरबी, फारसी के शब्दों की बहुलता थी और तभी अंग्रेजों का आगमन हुआ उनके आगमन के साथ उनकी अपनी भाषा भी आ गई। इस समय मध्यदेश में हिंदी के कई रुप आम लोगों में प्रचालित थे। अवधि और ब्रज भाषाओं में विपुल साहित्य लेखन हो रहा था। ब्रजभाषा में साहित्य लेखन करनेवाले खडीबोली को 'बाजारु भाषा'[1] समझते थे। वे खडीबोली को काव्य के अनुकुल नहीं मानते थे। यही कारण रहा कि आगे खडीबोली के विकास में भी भारतेंदु स्वयं अपने नाटकों में पद्यभाग बजभाषा में तथा गद्यभाग खडीबोली में लिखते थे। जबकी उर्दु के गद्य-पद्य की भाषा एक ही थी। हिंदी में गद्य-पद्य की दो भाषाओं को आम लोग भी सिखने से बचना ही चाहते थे। अपेक्षाकृत उर्दु आसान लगती। और वह शासन व्यवहार की भी भाषा बन ही गई थी। स्पष्ट है कि वातावरण हिंदी के नितांत विपरित था। हिंदी के लिए अंग्रेज सरकार के विचार सेएऐसी भाषा का जानना सब विद्यार्थियों के लिए आवश्यक ठहराना जो मुल्क की सरकारी और दफ्तरी जबान नहीं हैए हमारी राय में ठीक नहीं हैं।[2] साथ ही हिंदी प्रांत संयुक्त प्रदेश के शिक्षा विभाग के तत्कालीन अध्यक्ष श्री हैवेल ने जो कहा वह जो अति था। यह अधिक अच्छा होता यदि हिंदु बच्चों को उर्दु सिखाई जाती, न कि एक ऐसी बोली में विचार प्रकट करने का अभ्यास कराया जाता जिसे अंत में एक दिन उर्दु के सामने सिर झुकाना पडेगा।[3]इसके अतिरिक्त मुसलमानों तथा अंग्रेज शासकों ने एकेश्वरवाद के महत्व को भी बढाया और इसी की आड में अपनी भाषा का प्रचार भी खूब किया। सभी हिंदु उनके इस मत से प्रभावित होकर एकेश्वरवाद, भ्रातृत्व और समानता की ओर आकृष्ट हो रहे थे। सर सैयद अहमद खाँजैसे नेताओं ने हिंदी को गँवारी बोली नाम दे भी दिया था। हिंदी के विरुद्ध अनेक नेता विष-वमन कर रहे थे। इन लोगों के ऐसी कुटनीति से ही हिंदी न्यायालयोंए कार्यालयों से हटा उर्दु को स्थापित किया था। ऐसे समय में राष्ट्रोत्थान हेतु ऋषि दयानंद ने हिंदी को अपनाया। उन्होंने मुर्तिपूजा एवं अनाचारों का खण्डन कर वैदिक एकेश्वरवाद तथा गुण-कर्म-स्वभावानुसार वर्ण-व्यवस्था द्वारा समानता का स्वरुप प्रस्तुत किया। परिणामतः शिक्षित जनता प्रभावित हुई और पंडितों के मध्य संस्कृतभाषा में ही व्याख्यान और शास्त्रार्थ द्वारा प्रचार किया। वैसे भी हिंदी-प्रचार-पथ कण्टकाकीर्ण था। हिंदी के रास्ते में अनेक विरोधी शक्तियाँ लगी हुई थीं। परंतु आम लोगों की प्रचालित भाषा हिंदी ही थी। उसकी व्यापकता का ध्यान रखकर दयानंद सरस्वती ने हिंदी भाषण और लेखन का अभ्यास किया। जिस समय हिंदी को भद्दीबोली, गंवारु भाषा कहा जा रहा था उस समय ऋषि दयानंद ने हिंदी भाषा को 'आर्यभाषा' के गरिमामय नाम से अभिहित किय। भारत की तत्कालीन राजधानी कोलकाता में जब स्वामी जी साढे तीन महिने रहे, तो संस्कृत में ही व्याख्यान देते तथा वार्तालाप करते रहे। यहाँ उन्हें नवविधान ब्रह्मसमाज के नेता बाबू केशवचंद्र सेन ने परामर्श दिया कि अपने विचारों को जनता तक पहुँचाने के लिए हिंदी में व्याख्यान देना अधिक समीचित हैं क्योंकि यह भारत के जनसाधारन की भाषा है। यह बात स्वामी जी को उचित लगी उन्होंने सन 1873 में बाबू केशवचंद्र सेन के परामर्श से जन भाषा हिंदी कों अपनाया। उनकी दृष्टि में उनके 'संदेश को राजमहलों से लेकर गरीब की झोपडी तक पहुँचानेवाली भाषा हिंदी ही थी।'[4] हिंदी की संपर्क-क्षमता को देखकर ही उन्होंने उसे राष्ट्रीय स्वरुप दिया क्योंकि राष्ट्रीय संस्कृति को अपने में सहेजनेवाली भाषा भी हिंदी ही थी। महर्षि दयानंद जब धर्म प्रचार के क्षेत्र में आए तब उनके सामने यह समस्या थी की वे किस भाषा के द्वारा अपने विचारों को अन्यों तक संप्रेषित करें क्योंकि उनकी मातृभाषा गुजराती थी। किंतु उत्तर भारत में उससे विचारों के संप्रेषण में सहायता नहीं मिल सकती थी। वे संस्कृत के विद्वान थे और धारा प्रवाहित, अस्खलित वाणी के द्वारा गीर्वाण वाणी में अपने विचारों को सहजता से संप्रेषित करते थे। वे संस्कृत में भाषण देनेए लिखने और शास्त्रार्थ करने के अभ्यस्त थे अतः हिंदी प्रचार मार्ग में न केवल बाह्य समस्याएँ थी अपितु आंतरिक कठिनाइयाँ भी थी। उन्हें हिंदी में बोलने और लिखने का विशिष्ट अभ्यास करना पडा। उन्होंने सर्वप्रथम हिंदी में सन 1874 में भाषण दिया। तत्कालिन हिंदी साहित्य में खडी बोली के विकास के चरण में ऋषि दयानंद ने आर्यसमाज की स्थापना कर न केवल एक महान धार्मिक आंदोलन का सुत्रपात किया, अपितु इसके प्रचार के लिए हिंदी में ग्रंथ लिखकर खडीबोली हिंदी गद्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भाग लिया। पुनर्जागरण आन्दोलनों के संदर्भ में ऋषि दयानंद पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिंदी के महत्व को अनुभव किया और उसका अपने उपदेशों तथा ग्रंथो द्वारा व्यापक रुप से प्रचार किया। ऋषि दयानंद का धार्मिक, सामाजिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य सर्व विदित तो है परंतु उन्होंने हिंदी गद्य-निर्माता के रुप में भी उतना ही महत्वपूर्ण कार्य किया। यहाँभाषा को लेकर महर्षि दयानंद की दूर दर्शिता दिखाई देती हैं। ऋषि दयानंद द्वारा हिंदी को राष्ट्रभाषा पद पर पहुँचाने का क्रियात्मक पहलु अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिंदी भाषण द्वारा ऋषि दयानंद जनता के सीधे संपर्क में आए और उन्हें उपने सिद्धांतों के प्रतिपादन का अपूर्व अवसर प्राप्त हुआ। इस प्रकार धर्मप्रचार के साथ-साथ आर्यभाषा हिन्दी के प्रचार का श्री गणेश हुआ। उन्होंने आर्यभाषा को राष्ट्रभाषा बनाने का स्वप्न ही नहीं देखा अपितु उसके लिए क्रियात्मक प्रयत्न किए। मई सन 1874 ई. के पश्चात ऋषि दयानंद

बनाया। सामाजिक, दार्शनिक, राजनैतिक विषयों पर सबसे पहले उन्हीं की लेखनी खुली। इनके आंदोलन ने हिंदी को उठाया और विचार साहित्य का सृजन हुआ। भारतेंदु का क्षेत्र कथाए नाटक तक सीमित था परंतु स्वामी दयानंद ने गंभीर विषयों के सुचारु रुप से प्रतिपादन के लिए जिस परिमार्जित हिंदी का प्रयोग किया और जिस सशक्त व सुसंस्कृत शैली को अपनाया, वह अपने आप में एक नई चीज थी। दिनकर के अनुसार, श्दयानंद के समकालीन अन्य सुधारक, सुधारक मात्र थे, किंतु दयानंद क्रांति के वेग से आये।'"

संदर्भ सुची:-

1. ब्रजभाषा बनाम खडी बोली- डॉ.कपिलदेव सिंह, पृ.376
2. हिंदी साहित्य का इतिहास पृ.443
3. हिंदी साहित्य का इतिहास - पंण्रामचंद्र शुक्ल पृ.444
4. हिंदी साहित्य और उसकी प्रगति-श्री विजयेंद्र स्नातक, क्षेमचंद्र सुमन पृ.81
5. ऋषि दयानंद के पत्र और विज्ञापन सं.पं.भगवदत्त, भाग.2 पृ.662
6. महर्षि दयानंद सरस्वती और महाराणा सज्जनसिंह, श्री गौरी शंकर हीरानंद ओझा.1933 पृ.369
7. वही पृ.369
8. ऋषि दयानंद के पत्र और विज्ञापन भाग 2 सं.पं.भगवदत्त पृ.780
9. ऋषि दयानंद के पत्र और विज्ञापन भाग.2 सं.पं.भगवदत्त पृ.547
10. वही पृ.605
11. वही पृ.602
12. वही पृ.500
13. ऋषि दयानंद की हिंदी भाषा और साहित्य को देन.डॉ.मंजुलता विद्यार्थी, पृ.80
14. हिंदी उन्नायक महर्षि दयानंद लेख प्रकाश अभिनंदन ग्रंथ पृ.52
15. हिंदी भाषा और साहित्य को आर्यसमाज की देन, डॉ.लक्ष्मीनारायण गुप्त पृ.13
16. आर्यसमाज का इतिहास भाग-ड सं.डॉ.सत्यकेतु विद्यालंकार पृ.541
17. संस्कृति के चार अध्याय, श्री रामधारी सिंह दिनकर, पृ.464

स्वत्वाधिकारी,प्रकाशक,मुद्रक डॉ.मोहन बैरागी द्वारा अक्षरवार्ता पब्लिकेशंस से मुद्रित व 43,क्षीर सागर,द्रविढ़ मार्ग,उज्जै,मप्र,-456006 से प्रकाशित।
सभी विवादों का न्याय क्षैत्र उज्जैन रहेगा।संपादक- डॉ. मोहन बैरागी,फोन-0734-2550150,8989547427Email-aksharwartajournal@gmail.com